उत्तराखंड के खजाने

Deepak Nailwal

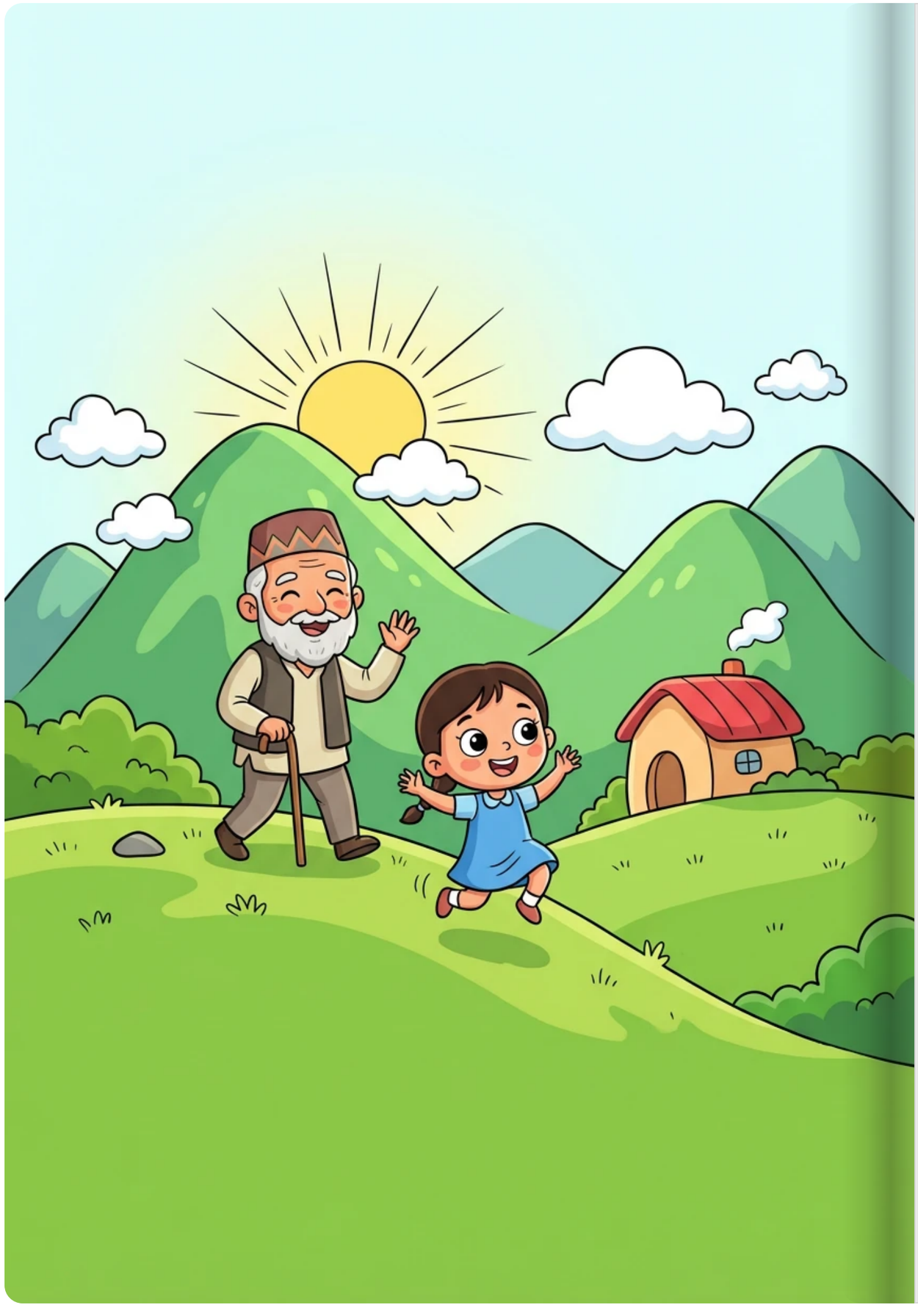

अमृता उत्तराखंड के पहाड़ों में अपने दादाजी के साथ रहती थी। व
हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ उठती और हरी-भरी वादियों
घूमने निकल जाती।

एक दिन, उसने एक गुप्त रास्ता देखा जो उसे एक जादुई बगीचे की ओर ले गया। वहाँ उसने कुमाऊंहर्बल के पेड़ देखे, जो स्वादिष्ट फल से लदे हुए थे।

बगीचे में, अमृता को एक बुद्धिमान बूढ़ी महिला मिली, जिसने उ
बताया कि ये फल विशेष हैं और इनसे जूस, अचार और पाउडर बना
जाते हैं जो सेहत के लिए बहुत अच्छे होते हैं।

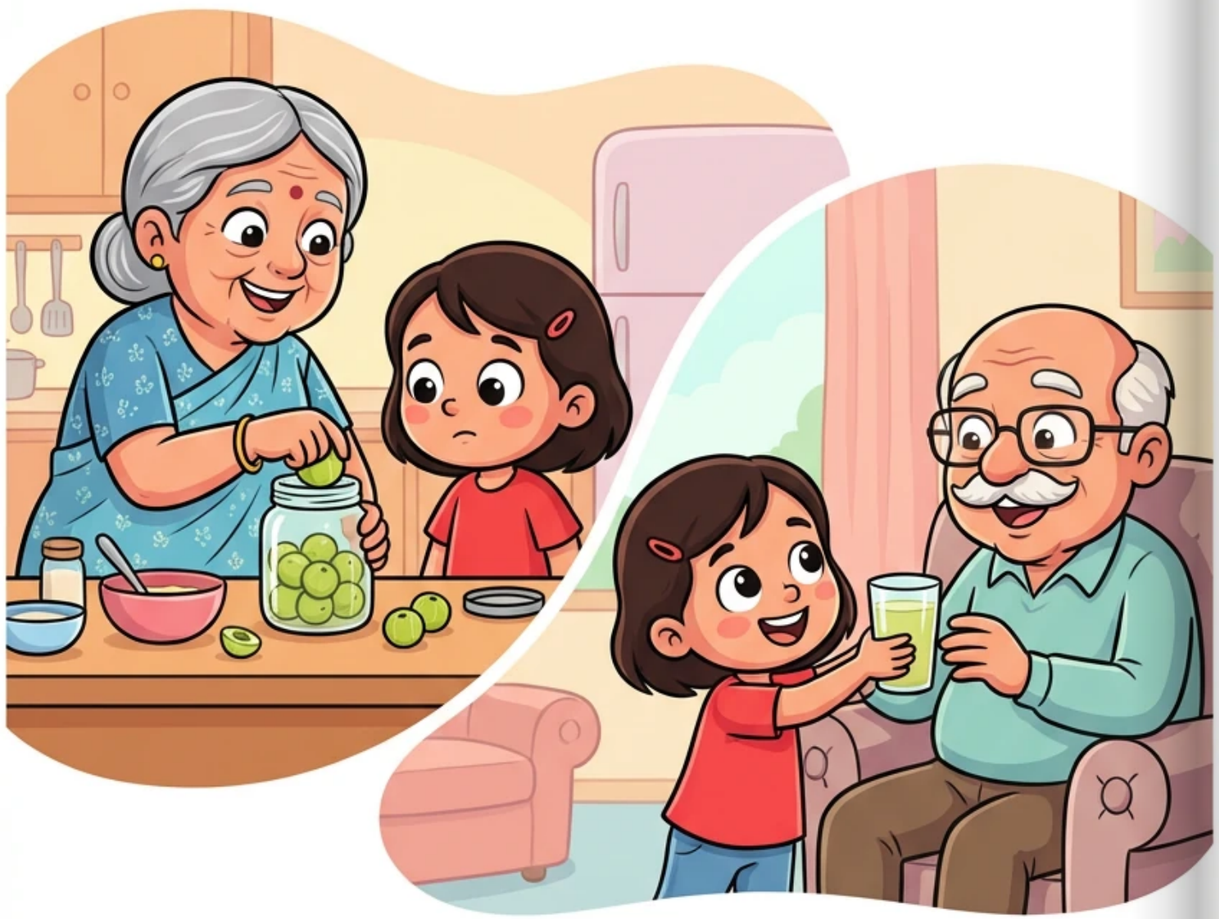

बूढ़ी महिला ने अमृता को आमला का जूस बनाने का तरीका सिखाया, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। अमृता ने ध्यान से सीखा और घर जाकर अपने दादाजी को जूस पिलाया।

अगले दिन, अमृता ने आम का अचार बनाना सीखा। उसने रसीले आमों को मसालों के साथ मिलाकर एक स्वादिष्ट अचार बनाया, जिसे सभी ने खूब पसंद किया।

फिर, उसने जामुन का जूस बनाना सीखा, जो मधुमेह के रोगियो
के लिए बहुत फायदेमंद होता है। अमृता ने इस जूस को अपने पड़ोसि
को भी पिलाया।

Amrita illustration with 2-3px bold black lines, Sonia Sati see in Dwarka.

अमृता ने सुना कि द्वारका में सोनिया सती नाम की एक महिला कुमाऊंहर्बल के उत्पादों को बेचती है। वह सोनिया से मिलने के लिए उत्साहित थी।

अमृता द्वारका गई और सोनिया से मिली। सोनिया ने उसे बताय कि कुमाऊंहर्बल के उत्पाद उत्तराखंड की शुद्धता और प्राकृतिक स्वाद का प्रतीक हैं।

अमृता ने सोनिया के साथ मिलकर कुमाऊंहर्बल के उत्पादों को और भी लोगों तक पहुंचाने का फैसला किया। उन्होंने मिलकर एक दुकान खोली और सभी को उत्तराखंड के खजाने के बारे में बताया।

अमृता और सोनिया की मेहनत रंग लाई। कुमाऊंहर्बल के उत्पाद हर घर में पहुंच गए और लोगों को स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद मिली। अमृता ने जान लिया कि प्रकृति का खजाना सबसे बड़ा खजाना है।